International Journal of Multidisciplinary Horizon

ISSN:3049-2017
IJMH 2025; 2(5): 171-175
© 2025 IJMH
www.themultijournal.com

Received: 11-10-2025
Accepted: 27-10-2025
Publish : 28-10-2025

हेमलता त्रिवेदी
शोधार्थी,संस्कृत विभाग.
पं. सं. - पी एचडी 202300001635
पी पी एन कालेज, कानपुर, उत्तर प्रदेश

शोध निर्देशिका
प्रोफेसर मीना गुप्ता
प्रोफेसर, संस्कृत विभाग,
पी पी एन कालेज कानपुर, उत्तर प्रदेश
छत्रपति शाहू जी महराज विश्वविद्यालय,
कानपुर, उत्तर प्रदेश

हेमलता त्रिवेदी
शोधार्थी,संस्कृत विभाग.
पं. सं. - पी एचडी 202300001635
पी पी एन कालेज, कानपुर, उत्तर प्रदेश

रक्षत् गंगाम् महाकाव्य का धार्मिक एवं आध्यात्मिक महत्व

हेमलता त्रिवेदी, प्रो. मीना गुप्ता

भारतीय विचारधारा में भगवती गंगा के प्रति राष्ट्र के हृदय में इतनी गहरी आस्था ज्ञात होती है कि वह सभी नदियों को गंगा शब्द से संबोधित करते हैं ।वह चाहे ब्रह्मपुत्र, कावेरी, नर्मदा और गोदावरी हो अथवा उसकी सहायक सरिताएं यमुना, सरयू, गण्डकी आदि कोई भी हो ।सभी में भगवती गंगा की पवित्रता और महिमा के भाव से भावित होकर भक्त उसके निर्मल जल में स्नान कर अपने जीवन को धन्य बनाता है इसलिए भगवान श्री कृष्ण चंद्र के मुखारविंद से निकलकर पियूषवाग्धारा श्रीमद्भगवतगीता के माहात्म्य में गीता के ज्ञान- प्रवाह को भी गंगासदृश स्वीकार किया गया है- "गंगागंगोदकम् पीत्वा पुनर्जन्म न विद्यते"।।

भगवती गंगा नदी है, नारी हैं, देवी है। इसके अतिरिक्त अन्य शब्द हैं।गंगा शब्द की व्युत्पत्ति दो धातुओं गम् और गै धातु से निष्पन्न है। गम् गतो प्राप्तौ गच्छति+ क्विप प्रत्यय गै शब्दे गायति+ डा= गंगा। गच्छतीति गायतीति गंगा। गच्छति गायति गंगेति। जो सर्वत्र गमन करे, सबको प्राप्त हो तथा जिससे शब्द उत्पन्न हो वह गंगा है इसी प्रकार गंगा शब्द में दो गुणधर्म है- गति और शब्द अर्थात गंगा शब्द में गतिब्रहत तथा शब्द ब्रहत का सतत निवास रहता है। जिस किसी भी प्रवाह में ये दो तत्व सदा रहते हो वह गंगा है।इन दो गुणों से युक्त हर प्रवाह गंगा है। गंगा शब्द स्त्रीलिंग का सूचक है।

भगवती गंगा को देखते ही मन प्रफुल्लित हो जाता है -- "प्रसादो भवति गंगा वीक्ष्य।"
अनुशासन पर्व

भौतिकवादी जगत में जनमानस के हृदय में गंगा एक भौतिक साधन हो सकती है किंतु इस देश की संतति के लिए एक महान आध्यात्मिक साधन है। मनुष्य गंगा पर भौतिक रूप से आश्रित नहीं रह सकता उसकी बुद्धि, विचार, विवेक ऊर्ध्वगामी बनेंगे। उस व्यक्ति विशेष में वैश्विक भावना प्रकट होगी। गंगाजल के सेवन मात्रा से ही उसकी भावनाएं प्रफुल्लित होगी इसलिए इस जगत के लिए कोटि-कोटि गंगा माता है। जिस प्रकार धरती हमें पोषक करती है उसी प्रकार माँगंगा भी पोषक एवं अपकर्मों से ऊपर उठकर परम ऐश्वर्यरूप में कैवल्य प्रदान करती है।

गोस्वामी तुलसीदास जी ने कहा भी है कि मां गंगा में यह क्षमता है कि वह संपूर्ण जगत का कल्याण करती है---

" सुरसरि सम सब कहँ हित होई"।

भगवती गंगा को शास्त्रों में विष्णु का अमृतद्रव और शिव की साक्षात तोयरूपा मूर्ति बताया गया है –

"ममैव सा परा मूर्तिस्तोयरुपा शिवात्मिका।
ब्रह्माण्डानामनेकेषामाधार: प्रकृति: परा।" स्कन्द पुराण

गंगाजल की महिमा का कहना ही क्या है? उसके स्पर्श मात्र से बड़े-बड़े पाप दूर हो जाते हैं। उसके स्वास्थ्य संबंधी गुणों का भी प्राचीन काल से ही उल्लेख मिलता है। गंगा का जल हम सब मनुष्यों के लिए एक अमृत रूपी जलधारा है।

गंगा को हमारे पवित्र देश में देव नदी के नाम से संबोधित करते हैं ।राजा भगीरथ की कठोर तपस्या के फल स्वरुप गंगा भूलोक में आई है इसलिए उन्हें भागीरथी कहा जाता है महानदी के बारे में शास्त्रों में कहा भी गया है कि --

"गिरिप्रभवा समुद्रगामिनी महानदी।"

अर्थात जो पहाड़ से उगती है और समुद्र में मिलती है वह महानदी है। महानदियों के विषय में तैत्तिरीय श्रुति में कहा है--

"नदीव प्रभावात् काचित् अक्षय्यात् स्यन्दते यथा।
तौ नद्योऽभिसमायन्ति सोरुस्सतीन न निवर्तते।।"

महाभारत में गंगा भीष्म की मां के रूप में दर्शन देती हैं। परशुराम से युद्ध करते समय जब भीष्म चेतनारहित होते हैं ।तब गंगा वहां आकर अपने पुत्र को उपकार करके चेतना देती है ।वहां मातृवात्सल्य रूप प्रत्यक्ष देखने को मिलता है।

आदि शंकराचार्य ने अपने ग्रंथ आविर्भूयात् उनर्भुवि में गंगा के महात्म्य को प्रतिपादित किया है--

"उपनिषदाममृतमिव भिक्षु:
सुरधुनी- जलभवलोक्य मुमुक्षु:।"
भवजलधिम् द्रुतमेव तितिर्षु:
शरणागतिमभिलषति तितिक्षु:।।"

उपनिषदों के अमृत के समान सुरधुनी गंगा के जल को देखकर मोक्ष की इच्छा वाले तितिक्षु सन्यासी शंकर शीघ्र भवसागर को पार करने की इच्छा से मां गंगा की शरणागति के इच्छुक हुए। शंकर के द्वारा रचित अत्यंत कामनीय इस गंगा स्तुति का पाठ करना चाहिए। नदी के अनुपम रमणीय तट को देखकर स्वर्ग के सुख को प्राप्त करना चाहिए।

पतित पावनी मां गंगा के विषय में ऋग्वेद में इंद्रसूक्त की एक आख्यायिका से यह ज्ञात होता है की वृत्र ने गंगा आदि नदियों के प्रवाह को रोक दिया था क्योंकि गंगाजल के प्रवाहमय होने से देवताओं के यागादि सत्कर्म अनुष्ठान संपन्न होते थे।वृत्र द्वारा गंगा आदि सप्तनदियों को रोक देने से समस्त विश्व व्याकुल होने लगा। तब इंद्र ने वृत्र को मारकर अवरुद्ध नदियों के प्रवाह को पुनः यथास्थान प्रवाहित किया।

ऋग्वेद के द्वितीय मंडल के 12वें सूक्त में कहा--

***"यो हत्वाहिमरिणात् सप्त सिन्धून्।"** ऋग्वेद-२/१२/३

***"अवासृजत् सर्तवे सप्त सिन्धून्।"** ऋग्वेद -२/१२/१२

इसका भाष्यकार सायणाचार्य ने मंत्र भाष्य में 'गंगायमुनाहरा मुख्या नदी: अरिणात' यह अर्थ किया है। इससे यह धार्मिक नियम स्पष्ट होता है कि गंगा में जलप्रवाह को यथावत बनाए रखना विश्व कल्याण के लिए आवश्यक है तथा उसको रोकना पाप का कारण है और दंडनीय अपराध है। हिंदू धर्म के पुराणादि ग्रंथों में जहां विराट पुरुष का वर्णन किया गया है। वहां पर गंगा आदि नदियों को विराट पुरुष की रक्तसंचालिका नाड़ी बतलाया गया है।

पंडित राज जगन्नाथ ने भी गंगा लहरी में --'स्खलन्ती स्वलोकादवनितल शोकापहतये' आदि मंगलमय श्लोकों से समस्त वसुधा तल के प्राणियों के शोक विनाश के लिए ही गंगा का अवतरण वर्णित किया है।

भगवान श्री कृष्णचंद्र ने गीता में स्वयं को गंगा स्वरूप स्वीकार किया है- पवन: पवतामस्मि राम: शस्त्रभृतामहम्। झषाणां मकरश्चास्मि स्रोतसामस्मि जाह्नवी। **(भागवत गीता 10/31)**

यह तथ्य किसी भी सुविज्ञ भारतवासी से अविदित नहीं है कि मानव जीवन की रक्षा से संबद्ध सभी औषधियां अधिकांशत: वन्य और पार्वतीय प्रदेशों में पाई जाती हैं और खास करके लंका के समर में लक्ष्मण जी और महाभारत में चेतनाशून्य अर्जुन की प्राणरक्षा पर्वतीय औषधियों से हुई थी। इन औषधियों की दृष्टि से हिमालय का क्षेत्र चिरकाल से अत्यंत प्रसिद्ध रहा है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि अमृतवाहिनी पुण्यतोया भगवती जाह्नवी जीव-जगत के सर्वविध दुखों को उपशमन की आधारशिला है। इनके द्वारा सर्वविध दुखों का विनाश हो जाता है इसलिए प्रत्येक भारतीय इसे राष्ट्र की प्राणशक्ति मानता है साथ ही इसका धार्मिक, दार्शनिक एवं सांस्कृतिक महत्व भी है। यहां का प्रत्येक देशवासी मृत्यु के समय तुलसीदल और गंगाजल पीकर अपने जीवन को धन्य एवं स्वयं को मोक्ष का अधिकारी मानता है। इसलिए प्राय: सभी पुराणों और उपपुराणों में गंगा की आराधना सविस्तार देखी जा सकती है। यह देश के लिए प्रकृति का वरदान है। जिसमें सार्वभौमिकता, सार्वजनीयता और उपकार का भाव लबालब भरा हुआ है।इस पतित पावनी मां गंगा में स्नान करने वालों को तीनों देवों की कृपा और उसका आशीर्वाद साक्षात प्राप्त होता है।

जैसा कि सभी जनमानस को विदित है कि भारत सरकार ने इसे सन 2008 ईस्वी में राष्ट्रीय नदी तो घोषित कर दिया है किंतु सभी को शुद्ध करने वाली सर्वविध औषधिरूपा गंगा स्वयं भयंकर प्रदूषण का शिकार बन गई है। इसमें अहर्निश विष घोला जा रहा है। बांध बनाकर गंगा को प्रदूषणमुक्ति के लिए हम सभी प्रयत्नशील हैं किंतु मात्र इतना ही पर्याप्त नहीं है। इसके लिए जन-जन में जागृति होनी चाहिए।

हम सभी जनमानस को मिलकर भगवान द्वारकाधीश एवं भगवान चंद्रमौलिश्वर से प्रार्थना करते हैं कि वे हम सभी को ऐसी शक्ति दे कि हम लोग मां गंगा के आंचल को पुनः पवित्र बना सके। गंगा अपना पूर्वरूप पुनः प्राप्त कर सके और हम सभी पुनः यह गा सके कि-

"गंगावारि मनोहरी मुरारिचरणच्युतम्।
त्रिपुरारि शिरश्चारि पापहारि पुनतुमाम्।।"

इस प्रकार पंच गकारो एवं पंचमाताओं में श्रेष्ठ मां गंगा भौतिक दृष्टि से नदीस्वरूपणि होते हुए भी सर्वतीर्थ स्वरूपिणी है तथा आध्यात्मिक दृष्टि में मोक्षप्रदात्री है। भगवदगीता पुस्तक मात्र न होकर संपूर्ण वेदोपनिषद, शास्त्रों, पुराणों तथा स्मृति इत्यादि संपूर्ण हिंदू सनातन धर्म का साररूप में उपदेशप्रदात्री सर्वशास्त्ररूपा है। महाभारत का यह श्लोक प्रसिद्ध ही है-

"सर्वशास्त्रमयी गीता सर्वदेवमयी हरि:।

सर्वतीर्थमयी गंगा सर्वेवेदमयी मनु:।। महाभारत भीष्म पर्व 43/2/

भगवती गंगा तीर्थ का दूसरा नाम है जैसा कि जनमानस को विदित है राम नाम ने असंख्य पापियों का उद्धार किया, वैसे ही तीर्थरुपा गंगा मां अनगिनत पापों से मनुष्य को दूर करती है।ऐसा तीर्थ है भगवती गंगा, जो पाप आदि से तारती है --

'तरति पापादिकं यस्मात्।'

विविध प्रकार के तीर्थों में गंगा स्थावर तीर्थ है। जो देश के बड़े भू-भाग में स्थायी रुप से प्रवाहित है। गंगा की महिमा तो अपार है। ब्रह्मपद की प्राप्ति का मार्ग तो गंगा है। गम्पतेब्रह्मपदमनया।

इससे बढ़कर गंगा की महिमा क्या हो सकती है। गंगा का नाम मात्र लेने से प्रत्येक जनमानस का मस्तक श्रद्धा से नत हो जाता है। जैसे राम और कृष्ण हमारे भारतीय जीवन के स्पंदन है। वैसे गंगा भी हमारी संस्कृति की धड़कन है। गंगा प्रत्येक जन मनिषियों में श्रद्धा भक्ति की पर्याय, आस्था, विश्वासों की धरोहर एवं भारतीय धर्म तथा संस्कृति की सुदृढ़तम आधारशिला है। अपौरुषेय वेदों से गंगा का बखान प्रारंभ होता है।आर्ष स्वर मुखरित हो उठते है --

'इमं में गंगे यमुने सरस्वति शुतुद्रि स्त्रोममं।।' ऋग्वेद १०/७५/५

पुराणों में गंगा के स्वरूप की महिमा एवं भव्यता का विशाल वर्णन है। आग्नेय पुराण में गंगा को स्वर्गदायिनी कहा गया है -- गंगा सर्वत्र ना कदा।

भारतीय जनमानस में आज भी गंगा जल हिंदू समाज के लिए अत्यंत श्रद्धा भाव से मानता है एवं आरोग्य प्राप्त करता है।ऐसी पुराणों में मान्यता है कि हिन्दू समाज में तो कोई भी मांगलिक कार्य बिना गंगा जल के संपन्न ही नहीं हो पाता।शरीर पर गंगा जल छिड़कने तथा गंगा के दर्शन मात्र से ही स्वयं को धन्य समझने वाले साधु स्वभावयुक्त मनुष्यों की आज भी भारत और संसार में कमी नहीं है।

यदि आपके देह में कोई रोग है तो मां गंगा के किनारे कुटिया बनाकर रहने एवं मां गंगाजल का सेवन करने मात्र से मनुष्य सभी प्रकार के रोग से मुक्त हो जाता है। कुछ ही मास में उसका गया हुआ स्वास्थ्य पुनः लौट आता है इसलिए प्रत्येक जनमानस को कुछ समय मां गंगा की शरण में जाकर निवास करना चाहिए जिससे निश्चय ही समस्त व्याधियां समाप्त हो जाएगी।

यह जगत जिसे सदैव नास्तिक समझता रहा उस युग पुरुष ने भी मां भागीरथी को अपने अंतर के ममत्वपूर्ण स्नेहिल शब्दों में श्रद्धा सुमन अर्पित कर एक महामानव का कर्तव्य पूर्ण किया। इसी प्रकार हमारे पूर्वज भारतीय महर्षि विद्वानों ने जो अनेक महाकाव्यों ग्रंथों और पुराणों में गंगा जल और गंगा की अपार महिमा का उल्लेख किया है।वह आधुनिक विज्ञान की कसौटी पर भी तपे स्वर्ण की भांति खरा उतरा है और यह भारत के लिए एक गौरव का विषय रहा है।

गंगाजल भारतभूमि की एक परम पुनीत, दिव्य और आरोग्यप्रदायक वस्तु है। अत्यंत प्राचीन काल से ही समस्त मानव जाति इसे श्रद्धा और सम्मान की दृष्टि से पूज्य मानती आयी है। प्रायः सभी प्राचीन ग्रंथों में चाहे वो आध्यात्मिक हो, ऐतिहासिक हो, स्वास्थ्य संबंधी हो या संस्मरणात्मक हो, किसी न किसी रूप में गंगा और गंगाजल का उल्लेख अवश्य आया है।इसे सभी पापों का नाशक एवं आध्यात्मिक परम लाभ की प्राप्ति का परम श्रेष्ठ साधन तो माना ही गया है एवं स्वास्थ्य की दृष्टि से भी इसका महत्व अधिक रहा है।

आयुर्वेद शास्त्र के अनुसार -- गंगाजल सभी प्रकार के जलों में सर्वोत्कृष्ट और सभी दोष नाशक सिद्ध होता है।यह शीतल जल तृप्तिदायक, आनंदवर्धक एवं पाचक जीवन शक्ति का विकास करनेवाला और समस्त रसायन गुणों से भरपूर है। यहां तक कि जनश्रुतियों में मान्यता है कि गंगा जल पीने और स्नान मात्र से समस्त शरीर के रोग नष्ट हो जाते हैं।मानव शरीर आरोग्य एवं दीर्घायु हो जाता है।इसी मत की पुष्टि चरक संहिता में भी की गई है। गंगा जल हैजा आदि संक्रमण रोगों के कीटाणुओं को नष्ट करता है। जैसा कि हमारे भारत वर्ष में गंगा पर अनेक अनुसंधान हुए। वैज्ञानिक हैकिन्स ने अपनी प्रयोगशाला में गंगा जल पर अनेक परीक्षण किए। गंगाजल के प्रति जनमानस में और भी आकर्षक और रुचि उत्पन्न हुई। इसी संदर्भ में एक बार विदेशी वैज्ञानिकों ने वाराणसी के गंगाजल तथा कूपजल में संक्रामक रोगों के कीटाणु छोड़े। कुछ अवधि के बाद यह देखकर आश्चर्य हुए कि कूपजल में तो कीटाणु कई गुना पनपकर बढ़ गये किन्तु गंगाजल में इन्हें समाप्त होते तीन घंटे भी न लगे।ऐसी मेरी पतित पावनी मां गंगा जल को सतत प्रणाम करती हूं। समस्त भू मंडल की सलिल सरिताओं में गंगा सर्वश्रेष्ठमय है क्योंकि यह मानवमात्र को वह अमृत प्रदान करती है जो उसे वास्तविक अर्थों में निरोग और दीर्घायु बनाता है। गंगा मां के दर्शन करने और बार-बार गंगा -गंगा मुख से कहने से मनुष्य के हृदय और मस्तिष्क पर उत्तम प्रभाव पड़ता है। गंगा के उच्चारण मात्र से ही समस्त पापों का नाश हो जाता है। इसमें तनिक भी संदेह करना व्यर्थ है। जैसा कि कुर्म पुराण में कहा गया है कि -- जिस प्रकार हिमालय जहां-जहां आच्छादित है, वह समस्त भाग पवित्र है, उसी प्रकार गंगा का प्रवाह जिन-जिन क्षेत्रों में है, वे समस्त क्षेत्र एवं तट पवित्र है। यथा--

"सर्वपुण्यं हिमवतो गंगा पुण्या च सर्वत:।।"

मनुष्य में जन्म से लेकर मृत्युपर्यंत गंगा हमारे संस्कारों में कहीं न कहीं, किसी न किसी रूप में जुड़ी हुई है।उनका यह जुड़ाव आज से नहीं युग-युगान्तरों से है। जो भारतीय संस्कृति को अक्षुण्ण बनाए हुए हैं। वह दो रुपों में हमारे हृदय में स्थापित है--

१.भौतिक रुप में।

२.आध्यात्मिक रुप में।

मां गंगा एक ओर तन के ताप को दूर करती है तो दूसरी ओर मन की मलिनता यानी सम्पूर्ण क्लेशों, परिणामों में हरने में भी पूर्णतः सक्षम है।शरीर की शुद्धि के साथ-साथ अंत:करण की पवित्रता के लिए हम गंगा की शरण में जाते हैं। गंगा अनंतधर्मा है इसलिए वे हजारों नामों से गुम्फित है।इनका जल मात्र पानी नहीं है अपितु वह जीवनदायी जैविक शक्ति प्रदाता होने से लोक में गंगा मैया के रूप में समाहित है। जैसा कि वनपर्व में एक श्लोक प्रसिद्ध है--

"सर्वं कृतयुगे पुण्यं त्रेतायां पुष्करं स्मृतम्।
द्वापरेऽपि कुरुक्षेत्रं गंगा कलियुगे स्मता।।
पुनाति कीर्तिता पापं दृष्टा मद्यं प्रयच्छति।
अवगाढा च पीता च पुनात्यासप्तमं कुलम् ।। वनपर्व ८५/१०/९३

अर्थात्--

कृतयुग में सभी स्थल पवित्र होते है, त्रेता युग में पुष्कर सबसे पवित्र होते है, द्वापर में कुरुक्षेत्र एवं कलयुग में गंगा की विशेष महिमा है। नाम लेने मात्र से गंगा पापी को पवित्र कर देती है। इन्हें देखने से सौभाग्य प्राप्त होता है, कल्याण मंगल प्राप्त होता है।जब इनमें स्नान किया जाता है या इनका जल ग्रहण किया जाता है तो सात पीढ़ियों तक 'कुल' पवित्र हो जाता है। मां पतित पावनी गंगा के समान इस धरातल पर कोई तीर्थ नहीं है।यह उत्तम देश है। जहां हम सब के मध्य में तपोवन मां गंगा पाई जाती है। भारतीय जनमानस को भी श्रीगंगादशमी के पावन पर्व पर हमें यह स्मरण रखना चाहिए कि ब्रह्मद्रव की इस जगपावनी धारा के सतत् प्रवाह को अक्षुण्ण बनाए रखने में ही हम सबका कल्याण निहित है।इस हेतु अपना जो कर्तव्य हो, उसका निर्वाह करने को हम -

सब को मिलकर अग्रसर रहना चाहिए।कम से कम अपने द्वारा गंगा प्रवाह के भौतिक स्वरूप को मलिन और प्रदूषित करने वाला कोई कृत्य न हो जाए।इसकी विशेष सावधानी रखनी चाहिए।

"गंगा सकल मुद मंगल मूला।
सब सुख करनि हरनि सब सूला।।" रामचरितमानस २/८७/४

मां गंगा भारतीय संस्कृति की प्रत्यक्ष मूर्ति है।ये हमारी पूर्ण धार्मिक व्यवस्था का अनिवार्य अंग है। ज्ञान की अधिष्ठात्री,कर्म की दिग्दर्शिका, भक्ति एवं श्रद्धा का आधार है। गंगा भारत वर्ष की सांस्कृतिक तपस्या का प्रत्यक्ष फल है। इससे दैहिक और पारलौकिक दोनों सम्पत्तियां प्राप्त हो जाती है। आज भी भारत वर्ष की करोड़ों जनता गंगाजल में गंभीर आस्था रखती हुई विभिन्न पर्वों पर दर्शन, स्पर्श,मज्जन एवं पान के द्वारा अपने जीवन को धन्य समझती है।

जगतगुरु शंकराचार्य ने अपनी लघु रचना 'भजगोविन्दम्' में भगवती गंगा का महात्म्य बतलाते हुए लिखा है कि --

"भगवद्गीता किंचिदधीता गंगाजललवकणिका पीता।
सकृदपि यस्य मुरारीसमर्चा तस्य यम: किं कुरुते चर्चाम्।।"

भगवान शंकराचार्य का यहां पर आशय यह है कि गंगा की एक बूंद भी यदि पी लिया जाए तो यम यातना से मुक्ति मिल जाती है। हिंदू समाज में कोई व्यक्ति मरणासन्न हो जाता है तब उसको गंगाजल तथा तुलसीपत्र उसके मुख में डाल दिया जाता है तब चमत्कारी लाभ देखने को मिलता है।प्राण निकलते समय मनुष्य को जो यम यातना मिलती है, गंगाजल के प्रभाव से सहज होकर स्वाभाविक रूप से वह कष्टमुक्त होकर महाप्रयाण करता है। भारत में जल को जीवन का सर्वस्व आधार तथा सर्वकल्याणकारी होने के कारण गंगा जल को ही सर्वश्रेष्ठ माना गया है। ऋषियों ने वैदिक काल से ही जलतत्व को सभी कामनाओं का पूरक तथा ब्रह्म के सदृश स्वीकार किया है जैसा कि छान्दोग्योपनिषद् में कहा गया है--

"स योऽपो ब्रहोत्युपास्त आप्नोति सर्वान कामान्।"

छान्दोग्योपनिषद ६/१०/२

मां गंगा हमारी संस्कृति की आत्मा है। गंगा के पावन जल में हम अपना सर्वस्व समर्पित कर शांति का अनुभव करते हैं। महाकवि कालिदास ने कुमारसंभवम् (दशमसर्ग) में वर्णित गंगा के विषय में बड़ा मनोहरी वर्णन किया है--

"स्वर्गारोहणनि: श्रेणिमोक्षमार्गाधिदेवता।
उदारदुरितोद्वारहारिणी दुर्गतारिणी।।
महेश्वरजटाजूटवासिनी पापनाशिनी।
सगरान्वयनिर्वाणकारिणी धर्मधारिणी।।
विष्णुपादोदकोद्भूता ब्रह्मलोकादुपागता।
त्रिभि: स्त्रोतोभिरश्रान्तं पुनाना भुवनत्रयम्।।"

कुमारसंभवम्- कालिदास १०/२९/३१

अर्थात्--

भगवती गंगा सब दुःख मिटा डालती है। सीढ़ी बनकर भक्तों को स्वर्ग पहुंचा देती है।मोक्ष दे डालती है, बड़े-बड़े पाप हर लेती है, कठिनाईयां दूर कर देती है। शंकर के जटाओं में विराजित हैं,सगर के पुत्रों को भी तारने वाली है।धर्म की भी रक्षा करने वाली है। विष्णु के चरण कमलों से जल के रूप में निकलकर ब्रह्मलोक से आयी है और अपनी तीव्र गति से धाराओं को तीनों लोकों में सदा पवित्र करती है।

पतित पावनी मां गंगा हमारे भारत देश की पहचान है। हमारे देश की सभ्यता एवं संस्कृति गंगा के किनारे विकसित हुई। साधु-संतों ने अपनी तपस्थली भी गंगा के किनारे बनाई। हमारी मान्यता है कि मरणासन्न व्यक्ति के गले में एक बूंद गंगा जल डाल दिया जाय तो मुक्ति निश्चित है। मंदिरों में पूजारी आदि लोग जब चरणामृत देते है तो उसमें भी गंगा जल एवं तुलसीदल रहता है। चरणामृत देते समय पूजारी जी यह मंत्र बोलते हैं --

"अकालमृत्युहरणं सर्वव्याधिविनाशनम्। n
विष्णुपादोदकं पीत्वा पुनर्जन्म न विद्यते।।"

अर्थात्-- यह चरणामृत यानी गंगाजल आपकी अकाल मृत्यु का हरण करेगा और जीवन की समस्त व्याधियों का नाश करेगा। इस भगवान विष्णु के चरण कमलों से जल पीने मात्र से पुनर्जन्म नहीं होगा अर्थात् मुक्ति मिल जाएगी। प्रत्येक हिंदू की यही अभिलाषा रहती है कि हमारा मोक्ष हो जाय।

पतित पावनी गंगा मां आज इतनी प्रदूषित होती जा रही है।सारे उद्योग कारखाने का जल गंगा को प्रदूषित कर रहा है। कहीं-कहीं गंगा गर्मी के समय मात्र एक नाला का आकार धारण कर लेती है। आज हम-सब का राष्ट्रीय कर्तव्य एवं उत्तरदायित्व बनता है कि हम गंगा को प्रदूषण मुक्त करें ताकि गंगा हमें पावनता एवं शीतलता प्रदान करती रहे। जैसा कि संस्कृत में एक वचन है --

"धर्मो रक्षित रक्षितः।।"

यानी आप धर्म की रक्षा करें, धर्म आपकी रक्षा करेगा। प्रकृति ने हमें गंगा को पवित्र रुप प्रदान किया है।यह विश्व में प्रकृति की अनुपम देन है।हमारा परम पावन कर्तव्य है कि गंगा की पावनता एवं शीतलता सुरक्षित रहे। मां गंगा के इस दर्द को दूर करने में जनमानस में एक परम नैतिक दायित्व बनता है कि मां गंगा के जल को स्वच्छ एवं सुरक्षित रखें।

पतित पावनी मां गंगा को शुद्ध करना साधारण बात नहीं है परन्तु संकल्प करने पर सबकुछ हो सकता है। इसके लिए सभी को सचेष्ट रहने की आवश्यकता है।हमारा जनता-जनार्दन से यही प्रार्थना है कि वह अपनी अंतरात्मा में बैठे शिवस्वरूप परमात्मा को पहचानने और अपने शरीर को गंगा स्वरूप समझें। अतः ऐसे पवित्र शरीर में वह रासायनिक खाद आदि जहर मिले हुए खेतों में पैदा हुए दूषित अन्न आदि को पेट में न डालें, ऐसे दूषित हवा-पानी से बचें और वैसा वस्त्र शरीर में न पहनें, जो वैदेशिक वैभव का प्रतीक हो। गोबर, गोमूत्र,नीम आदि से उगायीं गई वनस्पति तथा केंचुआ आदि से बनी खाद द्वारा पैदा हुआ अमृतरुपी अन्न तथा स्वच्छ जल ही उदर में डाले और अपने देश का बना कपड़ा ही पहने तो शरीररुपी गंगा अवश्य निर्मल हो सकती है। अपने शरीर में ज़हर डालने को गंगा में ज़हर डालने के समान पाप समझें और अपने शरीर में अमृतमय अन्न जल डालने को गंगा में अमृत डालने के समान पुण्य मानें। आज भारतीयों के मन में भी आधुनिक सभ्यता का ज़हर समा गया है।हम भारतीयता को हीन-गौण मानने लगे हैं,जब कि यहां की भाषा, यहां के संस्कार और शास्त्र तथा भारतीय किसान दुनिया में सर्वश्रेष्ठ हैं।जब हम भारतीयों का आत्मसम्मान जागेगा, तभी आधुनिक सभ्यता की श्रेष्ठता का ज़हर मिटेगा। इस प्रकार जनता-जनार्दन से हमारी दो ही मांगे है - एक तो भारत की श्रेष्ठता समझें और अपने पेट में अमृतमय अन्न और जल ही डालें।हम इतना कर सकेंगे तो गंगा निर्मल होगी और भारतीय संस्कृति सजीव हो उठेगी।

गोस्वामी तुलसीदास जी ने मानस में कहा है कि जिस प्रकार गंगाजल से बनाई हुई मदिरा त्याज्य है परन्तु वही अगर गंगा जी में मिल जाय तो पवित्र हो जाती है, ईश्वर और जीव में वैसा ही भेद समझना चाहिए --

सुरसरि जलकृत बारुनि जाना।
कबहु न संत करहि तेहि पाना।
सुरसरि मिले तो पावन जैसे।
ईस अनीसहि अंतरु तैसे।। रामचरितमानस १/७०/१-२

मां गंगा हमारी अस्मिता है, हमारी धरोहर है, हमारी संस्कृति है और हमारी पहचान है।इस पहचान को बनाये रखने हेतु हम सभी जनमानस को चैतन्य और सजग रहने की आवश्यकता है।

मैं अपने इस अल्प लेखन कार्य में समस्त जनमानस से यह आग्रह करती हूं कि इस पतित पावनी मां गंगा की स्वच्छता एवं पवित्रता पर विशेष ध्यान दिया जाए ताकि हमारी संस्कृति सजीव और अमृतमय हो जाय।

कूटशब्द -- पवित्रता, संस्कृति, श्रेष्ठता, अमृतमय, संकल्प, तपस्थली, चरणामृत, भारतीयता, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक,अमृतवाहिनी, जनमानस, पतित पावनी, गंगा, सामाजिक चेतना, परम्परागत।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1.आधुनिक संस्कृत साहित्य का इतिहास (सप्तम खण्ड) डॉ बलदेव उपाध्याय उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान लखनऊ प्रथम संस्करण 2000 ईस्वी।
2.नीति शतकम् भर्तहरि द्वारा रचित डॉ राजेश्वर शास्त्री मुसलगावकर चौखम्बा प्रकाशन 1950, वाराणसी।
3.गंगावतरण डॉ जगन्नाथ दास रत्नाकर,1986, इंडियन प्रेस, इलाहाबाद।
4.रामचरितमानस, संवत 2058, पैंसठवाँ संस्करण, गीता प्रेस, गोरखपुर।
5.श्रीमद्भागवत गीता, गीता प्रेस गोरखपुर।
6.महाभारत, गीता प्रेस, गोरखपुर।
7.पुराणों में गंगा, हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग 2009, संपादक- दयाशंकर दूबे।
8.गंगा सागरीयम् पंडित विष्णुदत्त शुक्ल।
9.गंगा अंक कल्याण, गीता प्रेस, गोरखपुर जनवरी 2016.
10.रक्षत् गंगाम् (गंगासप्तशती महाकाव्य) प्रथम संस्करण 1999 प्रकाशक श्री माता पब्लिकेशन बी०4/60 हनुमानघाट वाराणसी।